Introduction

प्राक्कथन

हिंदी कहानियों ने विगत बीस वर्षों में कल्पनातीत प्रगति की है। कहानियों की विकास-यात्रा प्रारंभ से लेकर आज तक अनेक पड़ाव व आन्दोलनों के मध्य से गुजरती हुई उस बिन्दु पर पहुँच गयी है जिस पर हिन्दी साहित्य गर्व कर सकता है। यह उल्लेखनीय है कि आज के युग में हिन्दी कहानी, साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा कही जा सकती है, क्योंकि मानव जीवन की अनुभूतियों को जिस समग्रता, मार्मिकता तथा सरलता के साथ कहानियों में अभिव्यक्ति मिली है, वह अन्यत्र सुलभ नहीं है। सामान्यत: साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है, अत: समाज व परिवार के परिवर्तन प्राय: साहित्य में विकीर्ण होते रहते हैं। जीवन रूपी चक्र में परिवार एक धुरी मात्र है, जिसमें मानव जीवन विकसित होता है। कहानी साहित्य की एक ऐसी विधा है जिसमें मानव की संवेदनाओं, आकांक्षाओं, क्रिया-कलापों तथा व्यवहारों को कलापूर्ण अभिव्यक्ति मिल जाती है। यही इस विधा की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। मानव जीवन में अन्तर्जगत तथा बाह्य जगत का कोई पक्ष ऐसा नहीं है जिसकी अभिव्यक्ति कहानियों में न की जा सके।

हिन्दी कहानी तथा कहानीकारों से सम्बंधित अनेक शोध कार्य हो चुके हैं। प्रकाशित शोध प्रबंधों से विदित हुआ है कि कहानी में विषय वस्तु, चरित्र चित्रण, उद्भव और विकास, यथार्थ व आदर्श, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण तथा सामाजिक परिवर्तन आदि विषयों पर अनेक शोध कार्य किये गये हैं। परन्तु स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में पारिवारिक जीवन के आयाम का अनुशीलन इस दिशा में अग्रिम कड़ी माना जा सकता है। इस अध्याय का प्रयोजन शोध- परम्परा का अनुगमन मात्र न होकर कहानी के आवरण से लिपटे मानव- जीवन और

परिवार के बदलते रूपों का अनुशीलन- विश्लेषण है, जिससे मानव के अभावों तथा मानसिक विकृतियों को अनुशीलन के आलोक में आलोकित कर पारिवारिक जीवन विषयक चिन्तन का मार्ग प्रशस्त किया जा सके । व्यक्ति तथा परिवार की समस्याओं को समझने तथा जानने में मेरी प्रारंभ से ही रुचि रही है । इस शोध कार्य में रत होकर आधुनिक पारिवारिक जीवन को निकट से निरखने व परखने की दृष्टि मुझे सहज ही मिल सकी है, जिससे इस विषय पर शोध कार्य कर मुझे अत्यन्त परितोष का अनुभव होता है ।

प्रेमचन्द के कहानी - साहित्य के आधार पर पारिवारिक जीवन का अनुशीलन, शोध-कार्य के रूप में हमें मिलता है, परन्तु जीवन की निरन्तर परिवर्तनशीलता तथा कहानियों में अभिव्यक्तिगत नये आयामों के विकास के आलोक में वह आज के युग का न रह कर स्वयं में एक कहानी बन गया है । बदलते परिवेश में पारिवारिक जीवन के विभिन्न आयामों से सम्बंधित शोध कार्य से साठोत्तर कहानी वंचित रही है । यह शोध-प्रबंध अध्ययन की दृष्टि से उक्त अभाव की पूर्ति के उद्देश्य से किया गया है, अत: विषय को मौलिक या नये मार्ग के अनुसंधान के प्रयास के रूप में स्वीकार किया जा सकता है ।

यह उल्लेखनीय है कि हिन्दी कहानी-साहित्य में साठोत्तर काल अनेक परिवर्तनों तथा उतार-चढ़ाव का काल रहा है । इस काल में कहानियों में नवीन वैचारिक दृष्टि तथा आधुनिकता का प्रभाव प्रतिफलित होता है, जिसने कहानी परम्परा को एक नवीन ~~वैचारिक दृष्टि तथा आधुनिकता का प्रभाव प्रतिफलित होता है, जिसने कहानी परम्परा को एक नवीन~~ दिशा व सुस्पष्ट मोड़ प्रदान किया है । आलोच्य काल में भौतिकवादी विचार ने पाश्चात्य

शिल्प से प्रभावित मानव की जीवन दृष्टि को ऐसा बना दिया है जहाँ व्यक्ति निरन्तर बदलते हुए विकसित नवीन जीवन मूल्यों व परम्परागत आचार-व्यवहारों को त्याग नहीं पाता । यहि इस प्रकार की द्वन्द्वात्मक स्थिति परिवार के स्वरूप में निःसंदेह परिवर्तन का कारण बनती है । इन परिस्थितियों के लिए ही शोध-प्रबन्ध का समय साठोत्तर निर्धारित किया गया है, जिसमें सन् १९६१ ई० से लेकर सन् १९७५ ई० तक की कहानियों को अनुशीलन का आधार बनाया गया है ।

साठोत्तर हिन्दी कहानियों में चित्रित पारिवारिक जीवन के अध्ययन से मैं इस परिणाम पर पहुँची हूँ कि साठोत्तर काल में युग की परिस्थितियों से प्रभावित भारतीय जीवन में पर्याप्त परिवर्तन हुआ है । जिसे हिन्दी कहानी ने अपना केन्द्र बिन्दु बनाया । यही कारण है कि साठोत्तर कहानियों में दाम्पत्य जीवन, पारिवारिक कलह, पुरुष का पुरुषोचित अहं व एकाधिकार, नारी का अहं तथा परम्परा के प्रति विद्रोह, उभरते जूझते व्यक्ति, नैतिक सम्बंधों में दृष्टि परिवर्तन, मानसिक विकृतियों से आक्रान्त व्यक्ति तथा विघटित समाज व परिवार, बदलते पारिवारिक सम्बंध तथा आयामों का चित्रण पूर्ण रूप से मिलता है । बदलते परिवेश में परिवार का स्वरूप एक ~~ḍụbb~~ संकुल समस्या का रूप धारण करता जा रहा है क्योंकि मानव किसी न किसी रूप में परिवार से सदा ही सम्बद्ध रहता है । अतः उसकी समस्यायें व जीवन के नये सम्पर्क ही पारिवारिक सम्पर्क बन जाते हैं ।

विवेचनगत सुविधा की दृष्टि से शोध-प्रबंध को आठ अध्यायों में

के द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । प्रथम अध्याय में 'हिन्दी कहानी साहित्य की विकास परम्पराएँ : साठोत्तर कहानी विषय वस्तु और शिल्प को समझने का प्रयास है । इसमें कहानियों में-कं की विकास परम्परा को कथ्य और शिल्प के सन्दर्भ में अंकित किया गया है । इस विकास-क्रम को देखते हुए यह आश्चर्यजनक स्थिति प्रकाशित होती है कि विगत सात दशकों में हिंदी कहानी एक विकसित साहित्यिक विधा के रूप में प्रस्तुत हुई है । साठोत्तर काल में कहानी के बदलते स्वरूप व लेखक की सजगता को लेकर अनेक आन्दोलन मिलते हैं, जिससे नई कहानी यहाँ साठोत्तर कहानी, सचेतन कहानी, अकहानी, समानान्तर या समकालीन कहानी का रूप लेती गयी । साठोत्तर कहानी में प्रत्येक स्थिति में लेखक की यथार्थ के प्रति सजगता तथा उसकी अभि-व्यक्ति एवं विश्लेषण में नवीनता के आग्रह के कारण वस्तु और शिल्प में तो परिवर्तन मिलता ही है, इसका रूप भी दिन- प्रतिदिन परिवर्तित होता जा रहा है । इस परिवर्तन का मुख्य कारण व्यक्ति, समाज तथा परिवार का विभिन्न स्थितियों से प्रभावित होना तथा उसके नये आयामों का स्थापित होना माना जा सकता है ।

द्वितीय अध्याय में पारिवारिक जीवन को प्रभावित करनेवाले पक्षों पर विचार किया गया है, जिनमें मुख्य पक्ष इस प्रकार हैं - वैवाहिक संस्थाएँ, मनोविज्ञान, स्वतंत्र स्त्री मनोविज्ञान, काम सम्बंधों का यथार्थ, यौन सम्बंध, आधुनिक यथार्थ बोध तथा इतर पारिवारिक सम्बंध । इन पक्षों के विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि ज्यों - ज्यों व्यक्ति की वैयक्तिकता का विकास हो रहा है, त्यों- त्यों वह परम्परागत मूल्यों को त्याग कर नवीन मूल्यों को अपना रहा है । यौन- मनोविज्ञान से प्रभावित व्यक्ति का विश्वास

आज प्लेटोनिक प्रेम से हट कर काम- विकार के संकुल तथा स्वाभाविक चेतना रूप में दृष्टिगोचर होता है, जिसमें प्रेम सम्बंध व्यक्ति की अपनी धारणाओं के अनुसार स्वीकार किये जाते हैं। इनमें विवशता, संशय, प्रतिशोध, स्वार्थ, परपीड़न को भी महत्त्व मिलता है। फलत: असफल होने पर व्यक्ति मनोवैज्ञानिक जटिलताओं से घिर कर मनस्तापी- ग्रंथियों (न्यूरोसिस) का शिकार बन जाता है और समाज से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता। इस प्रकार विवाह संस्था, पति-पत्नी के सम्बंध, सन्तान सम्बन्ध, परस्पर सहयोग तथा द्वन्द्व आदि सामाजिक परिवेश की देन ही नहीं है, अपितु सामाजिक जीवन के घटक के रूप में परिवार के गठन एवं विघटन के उत्तरदायी भी हो गये हैं। नर- नारी के सम्बंधों के अनेक विध मनोवैज्ञानिक आधार, यौनाकर्षण, चेतन और अचेतन में स्थित आशा-आकांक्षाओं, तज्जन्य कुंठाओं उनमें स्वतंत्र मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, काम सम्बंधों का यथार्थ तथा यौन सम्बंधों के ऐसे अनेक मनोवैज्ञानिक पक्ष हैं, जिन्हें पारिवारिक जीवन से पृथक नहीं किया जा सकता। स्वातंत्र्योत्तर काल में उपर्युक्त स्थिति अत्यधिक मात्रा में दृष्टिगोचर होती है जिसके कारण अनेक समस्याओं तथा चेतनाओं से युक्त काम, कुंठा, आदर्शहीनता तथा मूल्यहीनता के कारण व्यक्ति के आचार- व्यवहार मान्यताओं तथा पारिवारिक जीवन में पर्याप्त अन्तर आ गया है। प्रस्तुत विवेचन में समाज-विज्ञान, मनोविज्ञान तथा जीव- विज्ञान के ग्रन्थों से यथावश्यक सहायता ली गयी है किन्तु उनसे प्राप्त तथ्यों की व्याख्या अपने प्रतिपाद्य विषय को ध्यान में रख कर की गयी है, जो लेखिका का अपना निजी प्रयास है।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत आधुनिक युग में पारिवारिक जीवन के आयाम, बदलते हुए भारतीय जीवन मूल्यों के विशेष सन्दर्भ में विवेचित किया गया है। इसमें स्पष्ट किया गया है कि युग की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप किस

प्रकार जीवन के आयामों में परिवर्तन व चेतना आती है तथा साठोत्तर काल में, स्वातंत्र्योत्तर से भिन्न व मुख्य परिस्थितियाँ क्या रहीं जिनके कारण विशेष रूप से इसी काल में परिवर्तन हुआ। संयुक्त परिवार की समष्टि की भावना आज व्यक्तिवाद का स्थान लेती जा रही है जिससे परिवार में एकता तथा प्रेम का सर्वथा अभाव व पारिवारिक चेतना का ह्रास हो रहा है । आज भौतिकता को अत्यधिक महत्त्व मिल रहा है । इस नवीन दृष्टिकोण से ही परिवारों में विघटन अवश्यम्भावी हो गया है । आर्थिक स्थितियाँ भी एक जटिल समस्या बनती जा रही हैं । यह सामान्य जीवन पर ही नहीं वरन् परिवार में नैतिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों पर भी चोट करती हैं। इस कारण व्यक्ति के दृष्टिकोण व मूल्यों में परिवर्तन आ रहा है तथा जीवन मूल्यों के संक्रमण व प्राचीन मूल्यों के ह्रास में परिवार में नये जीवन-आयाम स्थापित होने लगे हैं । इसके लिए आज के भौतिकवादी युग में व्यक्ति स्वातंत्र्य की चेतना, नारी जागरण और स्वतंत्रता, औद्योगिकरण, नगरीकरण, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, राजकीय नियंत्रण तथा कानून प्रथा भी उत्तरदायी हैं । अतः पारिवारिक सम्बंधों का पतन व नवीन जीवन मूल्य आयामों का विकास हो रहा है । आज का युग संशय, विभ्रम, तनाव, विद्रोह तथा अनास्था का युग कहा जा सकता है । इनके कारण असन्तोष सर्वत्र विद्यमान है । समग्र समाज निहित स्वार्थों से विघटित होता जा रहा है । युग के संक्रमण और वैयक्तिक जीवन मूल्यों के आग्रह के फलस्वरूप संयुक्त परिवार तीव्रता से विघटन प्रणाली की ओर उन्मुख है । इस अध्याय में पारिवारिक जीवन के उपर्युक्त पक्षों को नयी व्याख्या के साथ प्रस्तुत किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय (पारिवारिक जीवन मूल्य) के अन्तर्गत स्पष्ट किया गया है। कि जीवन मूल्य क्या हैं ? कैसे बनते हैं तथा इनका परिवार पर क्या प्रभाव पड़ता

है ? जीवन मूल्यों को प्रभावित करने में शिक्षा, पाश्चात्य सभ्यता के प्रति व्यामोह तथा आर्थिक व्यवस्था विशेष रूप से मुखर रही है । पारिवारिक जीवन में परंपरागत मूल्यों का विघटन, नये मूल्यों का विकास विशेष रूप से परिवर्तन लाता है । परिवर्तित परिवेश के साथ- साथ मानव का दृष्टिकोण परिवर्तित होता जा रहा है । उसी के अनुरूप जीवन मूल्य व जीवन दृष्टि से प्रभावित परिवार का स्वरूप बन रहा है, जिसका अंकन साठोत्तरी कहानी में स्पष्ट रूप से मिलता है ।

पंचम अध्याय का शीर्षक है 'साठोत्तर कहानी और पारिवारिक जीवन'। इसके अन्तर्गत साठोत्तरी कहानी में चित्रित पारिवारिक जीवन का विवेचन विशेष सन्दर्भ में किया गया है, जिससे ज्ञात होता है कि इन कहानियों में पारिवारिक सन्दर्भों में निरन्तर परिवर्तन आ रहा है तथा पारिवारिक विघटन व पीढ़ी संघर्ष सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है । नारी-शिक्षा और आधुनिक दृष्टिकोण के अतिरिक्त अर्थार्जन में लगी नारी की स्थिति ने समाज की रूढ़ियों, पारम्परिक मान्यताओं तथा पुरुष की एकाधिकार एवं श्रेष्ठता की स्थिति को एक ओर चुनौती दी है, तो दूसरी ओर नर- नारी के सहज स्वाभाविक रागात्मक सम्बंध भी ऐसे रूपों में दृष्टिगोचर होते हैं जिससे नैतिक सम्बंधों में शिथिलता आती है । साठोत्तर काल में अर्थार्जन में लगी नारी को केन्द्र बना कर अपेक्षाकृत अधिक कहानियाँ मिलती हैं । कहीं-कहीं यह नारी परिवार में अधिक सामंजस्य स्थापित कर लेती है जिसका कारण पुरुष द्वारा किसी सीमा तक नारी की सत्ता को स्वीकार करना माना जा सकता है । अन्य सामान्य नारियों में भी सहज स्वाभाविक रागात्मक सम्बंध मिलते हैं । ये सम्बंध कामकाजी महिला के सम्बंधों की अपेक्षा पारिवारिक

जीवन को दूसरे ढंग से प्रभावित करने में सहायक होते हैं। अतः स्पष्ट है कि इस काल में अधिकांश परिस्थितियाँ नये मूल्य व आयाम स्थापित करने में सहायक सिद्ध होती हैं जिनका चित्रण साठोत्तर कहानी में जीवन मूल्यों के संक्रमण से परंपरागत मूल्यों का विघटन, नये मूल्यों का विकास तथा जीवन के नये आयामों के रूप में पूर्ण रूप से मिलता है।

षष्ठ अध्याय साठोत्तर कहानी में अंकित पारिवारिक जीवन मूल्यों से सम्बंधित है। इस अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि युगीन परि-स्थितियों के कारण जीवन मूल्य किस प्रकार परिवर्तित होकर कहानियों का केन्द्र बिन्दु बन रहे हैं। इनमें व्यक्ति जीवन व उसके विविध पारिवारिक सम्बंध, तीसरे व्यक्ति की कल्पना, पारिवारिक विघटन, पीढ़ी संघर्ष से सम्बंधित नवीन मूल्यों का चित्रण विशेष रूप से हुआ है। इन कहानियों में प्राचीन मूल्य कहीं-कहीं अपवाद स्वरूप फिर भी मिलते हैं तथा अन्य मूल्यों की स्थिति विकृत अवस्था में अपेक्षाकृत अधिक मिलती है।

साठोत्तर कहानियों में व्यक्ति का एक नया स्वरूप तथा जीवन के नये आयाम उभर कर आये हैं जिसने हिन्दी कहानियों को एक नयी दिशा, नया शिल्प तथा नयी मानसिकता प्रदान की है। इनमें व्यक्ति चेतना तथा बौद्धिकता से प्रभावित सामाजिक रीति-रिवाजों तथा परम्परागत मान्यताओं को नवीन रूप में प्रस्तुत किया गया है। अतः बौद्धिकता तथा अतिवैयक्तिकता के कारण मानवीय मूल्य आज मात्र अर्थगत तथा कामगत सन्दर्भों तक ही सीमित रह गये हैं। इसी कारण कहानियों में चित्रित परंपरागत सामाजिक सम्बंधों के साथ-साथ पारिवारिक जीवन अस्त-व्यस्त सा दृष्टिगोचर होता है तथा

दाम्पत्य जीवन मूल्यों में बिखराव आया है । परिणामत: स्त्री- पुरुष के पारिवारिक जीवन, सामाजिक सम्बंधों, उनके रिश्ते-नाते तथा परिवार सभी में परिवर्तन प्रतिफलित होता है, जिसका अंकन साठोत्तर कहानी में पूर्ण रूप से मिलता है । ये कहानियाँ यौन-चेतना, नारी चेतना, व्यक्ति चेतना तथा उनके फलस्वरूप पीढ़ी संघर्ष से विशेष रूप से प्रभावित हैं जो पारिवारिक जीवन के नवीन आयामों के सशक्त पक्ष हैं । यह अध्ययन भी लेखिका का अपना मौलिक प्रयास है ।

सप्तम् अध्याय में सामाजिक सन्दर्भ में पारिवारिक परिवेश का विश्लेषण साठोत्तर कहानी के विशेष सन्दर्भ में किया गया है । परिवार समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई है । अत: जहाँ वैयक्तिक चेतना तथा पारिवारिक संगठन के विविध आयामों से पारिवारिक परिवेश पर प्रभाव पड़ा है, वहाँ सामाजिक जीवन के प्रभावों की अनिवार्यता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि अन्तत: परिवार या व्यक्ति सामूहिक जीवन से कट कर नहीं रह सकता । सामाजिक जीवन की मान्यताओं तथा परंपराओं के साथ व्यक्ति और परिवार के द्वन्द्व से यह प्रक्रिया आरंभ हो जाती है । समाज और व्यक्ति के संघर्ष, परम्परा और व्यक्ति की स्वतंत्रता के संघर्ष तथा उनके परिणामस्वरूप सामंजस्य स्थापन या समाज के प्रति दायित्व की अस्वीकृति आदि से पारिवारिक परिवेश में किन नये आयामों का विकास हुआ है, इसका अनुशीलन इस अध्याय का मुख्य विषय है । प्रस्तुत अध्याय की सामग्री आलोच्यकालीन कहानी- साहित्य से ली गयी है किन्तु तथ्यान्वेषण, उनकी व्याख्या तथा उनसे प्राप्त निष्कर्ष लेखिका के अपने निजी हैं ।

अष्टम् अध्याय में साठोत्तर युग के मुख्य कहानीकारों के साहित्य तथा

उनकी पारिवारिक जीवन दृष्टि का अनुशीलन है । साठोत्तर काल में कहानीकारों की एक ऐसी मिश्रित पीढ़ी मिलती है जिसमें प्रथम कुछ कहानीकार सन् साठ के पूर्व में विशेष चर्चित रहे परन्तु परिवेश के अनुरूप उनकी रचनाएँ साठोत्तर काल की चेतना से भी पूर्ण सम्पृक्त कही जा सकती हैं यथा- मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव आदि । द्वितीयत: कुछ कहानीकार ऐसे हैं जो सन् साठ के पूर्व से लिख रहे हैं परन्तु स्थापित कहानीकार के रूप में साठोत्तर काल में ही उभर कर आये । यथा- उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, डॉ० महीपसिंह आदि । तृतीयत: वे नये कहानीकार हैं जिनका लेखन साठोत्तर काल का है। यथा- दीप्ति खंडेलवाल, ज्ञानरंजन आदि ।

प्रस्तुत अध्याय में इन कहानीकारों की कहानियों में चित्रित पारिवारिक जीवन दृष्टि पर भी विचार किया गया है । इस जीवन दृष्टि को दो प्रकार से देखा जा सकता है । प्रथम- केवल कहानियों के तथ्यों से प्राप्त पारिवारिक जीवन दृष्टि का रूप । द्वितीयत: कहानियों के तथ्यों से प्राप्त पारिवारिक जीवन दृष्टि का रूप तथा कहानीकारों द्वारा समय-समय पर प्रस्तुत साक्षात्कारों, भूमिकाओं आदि के माध्यम से प्राप्त पारिवारिक जीवन दृष्टि के तथ्यों के सामंजस्य से प्राप्त जीवन दृष्टि का रूप । इस संदर्भ में साठोत्तर कहानियों को देखने पर ज्ञात होता है कि कुछ कहानीकार पारिवारिक चेतना से पूर्णतया संपृक्त हैं तो कुछ पूर्णतया असम्पृक्त दृष्टिगोचर होते हैं । कुछ कहानीकारों की स्थिति दोनों में समन्वय की है । उनकी कुछ कहानियाँ पारिवारिक चेतना की हैं तथा कुछ पारिवारिक चेतना से दूर जा पड़ी हैं ।

अन्तिम अध्याय 'उपसंहार' का है जो समग्रतया मूल्यांकन के माध्यम से

एतद्विषयक उपलब्धियाँ, सन् १९७५ ई० के बाद की कहानियों में अंकित पारिवारिक जीवन के आयामों, इतर जीवन पक्षों के विवेचन से सम्बंधित है । तदनन्तर अध्ययन की नयी संभावनाओं पर विचार किया गया है । इस अध्ययन द्वारा लेखिका इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि साठोत्तर हिन्दी कहानी पारिवारिक जीवन और उसमें भी विशेषकर नगरों के पारिवारिक जीवन के विविध पक्षों को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम सिद्ध हुई है । प्रस्तुत शोध- प्रबंध के अध्ययन के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि साठोत्तर कहानियों में पारिवारिक जीवन अत्यन्त अस्त- व्यस्त तथा नये जीवन-आयामों से प्रतिफलित दृष्टिगोचर होता है । इस दिशा में लेखिका का एक नम्र प्रयास है और उसे आशा है कि हिन्दी कहानी को आधार बनाकर इस जीवन पक्ष पर भविष्य में गंभीर अध्ययन प्रस्तुत होंगे ।

अन्त में मैं उन महानुभावों, आत्मीयजनों तथा विद्वानों के प्रति आभार प्रकट करना चाहती हूँ जिनके आशीर्वाद एवं सहयोग के फलस्वरूप ही यह शोध कार्य संभव हो सका है । सर्वप्रथम परमपूज्य एवं हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वान प्रो० मदनगोपाल गुप्त जी का आभार प्रकट करने के लिए, मैं शब्दों का अभाव अनुभव कर रही हूँ, जिनकी असीम कृपा व स्नेहिल निर्देशन में मुझे सदैव शोध कार्य के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा चिन्तनपरक मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा । गुरुवर गुप्त जी के उदार व्यक्तित्व एवं अपार पांडित्य की छत्र-छाया में रह कर मैं जो कुछ अर्जित कर सकी हूँ उसी का प्रतिफलन यह शोध-प्रबंध है । सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर के हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं साहित्य के प्रतिष्ठित आलोचक डॉ० शिवकुमार मिश्र जी ने समय-समय पर अपने अमूल्य सुझाव प्रदान कर मेरा मार्गदर्शन किया अत: मैं हार्दिक रूप से उनकी आभारी रहूँगी । हिन्दी विभाग, खालसा कालिज, दिल्ली के

प्रतिष्ठित विद्वान एवं श्रेष्ठ सचेतन कहानीकार डॉ० महीपसिंह जी के स्मरण मात्र से ही मैं नत-मस्तक हो जाती हूँ जिन्होंने मुझे आवश्यकतानुसार शोध-सामग्री व अपने बहुमूल्य विचारों तथा परामर्शों द्वारा मेरा मार्गदर्शन किया। उन पुस्तकालयों, संस्थानों, उनके संचालकों तथा कर्मचारियों के प्रति भी आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य मानती हूँ जिन्होंने मुझे अध्ययन सामग्री संचय करने में भर-पूर सहायता की। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रति लेखिका हृदय से आभारी है, जिसकी आर्थिक सहायता तथा शोध छात्र वृत्ति के कारण यह कार्य भली-भांति सम्पन्न हो सका है। साथ ही महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय जिसके उच्चस्तरीय अध्ययन, अध्यापन का आज कीर्तिमान प्रतिष्ठित है, के अधिकारियों के प्रति मैं विनयावनत हूँ जिनकी व्यवस्था के अन्तर्गत यह कार्य पूरा हो सका है।

निवेदिका,

किरण

(किरण लता गर्ग)